कक्षा–12

दूभि धान

भाग–2

दूभि धान

भाग-2

कक्षा 12 खातिर

(एस.सी.ई.आर.टी. बिहार, पटना द्वारा विकसित)
बिहार स्टेट टेक्स्टबुक पब्लिशिंग कॉरपोरेशन लिमिटेड

मानव संसाधन विकास विभाग, बिहार सरकार द्वारा स्वीकृत।

राज्य शिक्षा-शोध एवं प्रशिक्षण, परिषद्, बिहार, पटना के सौजन्य से सम्पूर्ण बिहार राज्य के निमित्त।

© बिहार स्टेट टेक्स्टबुक पब्लिशिंग कॉरपोरेशन लिमिटेड, पटना

प्रथम संस्करण : 2008

मूल्य : रु० 32.00

बिहार स्टेट टेक्स्टबुक पब्लिशिंग कॉरपोरेशन लि०, पाठ्य-पुस्तक भवन, बुद्ध मार्ग, पटना-800 001 द्वारा प्रकाशित तथा टेक्स्टबुक प्रेस, पटना-800001 द्वारा एच.पी.सी. के 70 जी.एस.एम. क्रीम वोम (वाटर मार्क) टेक्स्ट पेपर पर 5,000 प्रतियाँ 20.5 × 14 सेमी. साईज में मुद्रित।

प्राक्कथन

मानव संसाधन विकास विभाग, बिहार सरकार के निर्णयानुसार जुलाई 2007 से राज्य की उच्च माध्यमिक कक्षाओं (कक्षा - XI - XII) हेतु नए पाठ्यक्रम को लागू किया गया है। नए पाठ्यक्रम के आलोक में भाषा की पुस्तकों का विकास एस० सी० ई० आर० टी०, पटना द्वारा तथा आवरण डिजाइनिंग एवं मुद्रण बिहार राज्य पाठ्यपुस्तक प्रकाशन निगम के द्वारा किया गया है। यह पुस्तक उसी शृंखला की एक कड़ी है।

बिहार राज्य में विद्यालयीय शिक्षा (कक्षा - I - XII) के गुणवत्तापूर्ण सशक्तिकरण के लिए कृतसंकल्पित शिक्षा के समर्थ योजनाकार माननीय मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार, मानव संसाधन विकास मंत्री, श्री हरिनारायण सिंह तथा मानव संसाधन विभाग के प्रधान सचिव श्री अंजनी कुमार सिंह के मार्ग-निर्देशन के प्रति हम कृतज्ञ हैं।

हमें आशा है कि यह पुस्तक राज्य की वर्तमान एवं भावी पीढ़ी के लिए ज्ञानोपयोगी सिद्ध होगी। एस० सी० ई० आर० टी० के निदेशक के हम आभारी हैं, जिनके नेतृत्व में इस पुस्तक को विकसित किया गया।

हमें आशा ही नहीं, पूर्ण विश्वास है कि प्रस्तुत पुस्तक शिक्षार्थी के ज्ञानवर्धक एवं उपलब्धि-स्तर की वृद्धि में सहायक होगी। संवर्द्धन एवं परिष्करण की संभावनाएँ सदैव भविष्य की गोद में सुरक्षित रहती हैं। प्रकाशन एवं मुद्रण में निरंतर अभिवृद्धि के प्रति समर्पित बिहार राज्य पाठ्य-पुस्तक प्रकाशन निगम छात्रों, अभिभावकों, शिक्षकों, शिक्षाविदों की टिप्पणियों एवं सुझावों का सदैव स्वागत करेगा जिससे बिहार राज्य को देश के शिक्षा जगत में उच्चतम स्थान दिलाने में हमारा प्रयास सहायक सिद्ध हो सके।

हसनैन आलम, भा० प्र० से०
प्रबंध निदेशक
बिहार राज्य पाठ्य-पुस्तक
प्रकाशन निगम लि०

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

दिशा बोध

श्री हसन वारिस
निदेशक (प्रभारी)
राज्य शिक्षा-शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार

श्री रघुवंश कुमार
निदेशक (शैक्षणिक)
बिहार विद्यालय परीक्षा समिति

डॉ. कासिम खुर्शीद
विभागाध्यक्ष (प्रभारी) भाषा शिक्षा विभाग
राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार

डॉ. सैयद अब्दुल मोइन
विभागाध्यक्ष, अध्यापक शिक्षा विभाग
राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार

भोजपुरी पाठ्य-पुस्तक विकास समिति

अध्यक्ष
प्रो. ब्रजकिशोर
संपादक
भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका, पटना-6

संयोजक
डॉ. सुरेन्द्र कुमार
व्याख्याता
राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार

सदस्य

1. **डॉ. जीतेन्द्र वर्मा**, सह-सम्पादक, भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका, पटना-6
2. **डॉ. ब्रजभूषण मिश्र**, व्याख्याता, श्यामनंदन सहाय महाविद्यालय, मुजफ्फरपुर
3. **डॉ. रत्नाकर त्रिपाठी**, वरीय शोध फेलो, आद्री, पटना
4. **श्रीमती बेबी कुमारी**, सहायक शिक्षिका, राजकीयकृत उच्चविद्यालय, महदलीचक (सारण)

बिहार विद्यालय परीक्षा समिति (उच्चतर माध्यमिक), पटना द्वारा आयोजित समीक्षा संगोष्ठी के सदस्य

1. **गोवर्द्धन सिंह**, प्राचार्य एवं अध्यक्ष स्नातकोत्तर, भोजपुरी विभाग, वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय (आरा)
2. **श्री सूर्यदेव प्रसाद साह**, रीडर एवं अध्यक्ष हिन्दी विभाग, आर.बी.जी.आर. कॉलेज, महाराजगंज (सीवान)
3. **डॉ. सुरेन्द्र कुमार**, व्याख्याता राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार

अकादमिक सहयोग

1. **श्री इम्तियाज आलम**, व्याख्याता, एस.सी.ई.आर.टी. बिहार, पटना
2. **डॉ. ज्ञान्ति कुमारी**, व्याख्याता, शिक्षा संकाय, राँची विश्वविद्यालय, राँची
3. **श्री ज्ञानदेव मणि त्रिपाठी**, राज्य साधन सेवी, बी.ई.पी., पटना
4. **श्री देवेन्द्र प्रसाद**, प्राचार्य, उच्चविद्यालय, परसा (सारण)

प्रस्तावना

ई किताब बिहार सरकार के नवका पाठ्यचर्या के मुताबिक राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद् द्वारा विकसित कइल गइल बा। एकरा खातिर राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद् कई गो कार्यशाला, सेमिनार आ गोष्ठी आयोजित कइलस, जवना में बड़ी मेहीनीं से विचार-विमर्श भइल।

विश्वभर के शिक्षाशास्त्री लोग के ई विचार बा कि शिक्षा मातृभाषे में दिहल जाये के चाही। भारतीय संविधानो में मातृभाषा में शिक्षा देवे के वादा कइल गइल बा। कई करोड़ भोजपुरिया लोग अबहीं ले अपना एह न्यायोचित अधिकार से वंचित रहल ह। बिहार अइसन पहिला राज्य बावे जहाँ भोजपुरी में विद्यालयी शिक्षा शुरू हो रहल बा। एकरा पहिले ई कुछ विश्वविद्यालयन में जरूर पढ़ावल जात रहल हवे।

भोजपुरी बोले वाला लोग भारत के अलावे मरीशस फिजी, गुयाना, ट्रीनाडाड, हालैण्ड, नेपाल में बढ़हन संख्या में बा। एने कावर सिनेमा, विज्ञापन के दुनिया में एकर उछाल आइल बा। एह में रोजगार के अवसर भी बा।

एह किताब के बनावे खातिर पाठ्यक्रम निर्माण समिति बड़ी मेहनत कइलस। एह समिति के संयोजक **डॉ. सुरेन्द्र कुमार** (व्याख्याता, एस.सी.ई. आर.टी.) विशेष धन्यवाद के पात्र बानी, जे बहुते लगन आ परिश्रम से एह काम के पूरा करावल। समिति के अध्यक्ष **प्रो. ब्रजकिशोर**, (संपादक, भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका), सदस्य **डॉ. जीतेन्द्र वर्मा** (सह-संपादक, भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका), **डॉ. ब्रजभूषण मिश्र**, **डॉ. रत्नाकर त्रिपाठी** रात-दिन मेहनत कइल। जेकर रचना एह पुस्तक में दिहल गइल बा ओह सभी रचनाकार लोग का प्रति हमनी आभारी बानी।

ई किताब पहिला बेर बनि रह बा। संभव बा कि एह में कुछ कमी रह गइल होखे। जे छात्र, शिक्षक, भा अविभावक एह कावर ध्यान दिवाई ओकर हमनी आभारी होखब।

हसन वारिस
निदेशक (प्रभारी)
राज्य शिक्षा शोध एवं अनुसंधान परिषद्, पटना

ई किताब

ई किताब एगो सामूहिक प्रयास के देन ह । नयका पाठ्यचर्या में सुझावल उद्देश्य आ मूल्यन के मद्देनजर पाठ्यक्रम बनावल गइल बा । एकरा खातिर राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, पटना कई गो कार्यशाला आयोजित कइलस आ हमनियों कई एकगो अनौपचारिक बइठक में विचार-विमर्श कइनी ।

एह किताब में हमनी के गद्य आ पद्य के यथासंभव अधिक से अधिक विधा शामिल करे के प्रयास कइले बानी । गद्य में कहानी के संगे-संगे वैचारिक आ ललित निबंध, संस्मरण आ भाषण दिहल बा । पद्य में भी हर विधा के रचना राखे के प्रयास राखल बा । रचना चयन में हमनी के छात्रन के मानसिक स्तर, चरित्र निर्माण, सामाजिक सद्भाव, राष्ट्रीय एकता जइसन मूल्यन के ध्यान रखले बानी ।

भोजपुरी के भाषाई नीति तय करे खातिर हमनी कइगो औपचारिक आ अनौपचारिक बैठक कइनी । पर्याप्त विचार-विमर्श का बाद हमनी तय पवनी कि "भोजपुरी अब भाषा के रूप ले चुकल बिया । अब ई विचार आ शास्त्र के भाषा बन चुकल बिया । जल्दीए शासन-प्रशासन, ज्ञान-विज्ञान आदि के भी भाषा बनी । अइसन स्थिति में एकरा खातिर देवनागरी लिपि के कवनो अक्षर, संयुक्ताक्षर या मात्रा के छोड़ल ठीक ना होई, ताकि अभिव्यक्ति में कवनो कठिनाई ना होखे ।

जवना चीज खातिर भोजपुरी में शब्द बा निःसंदेह ओकरा के अपनावे के चाही बाकिर हिंदी, अंग्रेजी आ आउरो कवनो भाषा के शब्दन के

भोजपुरियावे के फेर में ओकर वर्तनी बिगाड़ल ठीक नइखे । जरूरत पड़ला पर दोसरा भाषा के शब्दन के बेहिचक अपनावे के चाहीं । एह से भोजपुरी समृद्ध होई । बंगला, मैथिली इहे कइले बा । एह से भोजपुरी के विकास होई । अंग्रेजी के समृद्धि के एगो बड़हन वजह इहो बा कि ऊ अपना जरूरत के मुताबिक कवनो भाषा के शब्दन के अपना लेले । हमनी खाँटी भोजपुरी के आग्रह से बचे के प्रयास कइले बानी । जब भोजपुरी के हर तरह के अभिव्यक्ति के भाषा बनावे के बा त मुख सुख, स्थानीय प्रयोग आदि के आग्रह से ऊपर उठे के होई । दुनिया के सब भाषा के स्थानीय रूप बाटे बाकिर ओह हिसाब से लिखल ना जाला ।

चूँकि भाषा सामाजिक संपति हवे । ई समाज में जन्म लेले आ समाजे में विकसित होले । एह से समाज में आइल बदलाव के हिसाब से भोजपुरी के अपना के ढाले के पड़ी । हरेक भाषा के एगो ग्राम रूप (Cocknex) आ एगो शिष्ट रूप होला ।''

विख्यात विद्वान राहुल सांकृत्यायन भोजपुरी में भी लिखनी । उहाँ के लेखन के ऐतिहासिक महत्त्व बा । समाज में कुछ लोग जोंक खानी दोसरा के शोषण करत आइल बा । सामाजिक समरसता खातिर शोषण खतम कइल जरूरी बा । राहुल जी के प्रसिद्ध नाटक 'जोंक' के एगो अंश इहाँ दिहल बा जवना में ज़मीन्दारन के अनाचार उजागर कइल बा ।

रामेश्वर सिंह काश्यप के कहानी 'मछरी' में घर-परिवार के स्थिति बतावत छात्रन में एगो मानवीय सोच पैदा करतिया । एह कहानी से भोजपुरी कहानी में एगो नया मोड़ आइल ।

उदयनारायण तिवारी एगो प्रसिद्ध भाषा वैज्ञानिक रहीं । उहाँ के संस्मरण बड़ा रोचक आ ज्ञान के प्रति पिपासा बढ़ावे वाला बा । हीरा डोम के कविता 'अछूत की शिकायत' समाज के सतावल वर्ग के प्रति सहानुभूति जगावता आ व्यवस्था के न्यायपूर्ण बनावे के मानसिकता पैदा करता ।

भगवतशरण उपाध्याय प्रसिद्ध विद्वान रहीं । उहाँ के भाषण देश-दुनिया का बारे में कई गो बात बतावता । महेन्द्र शास्त्री के लेखन सामाजिक सरोकार से जुड़ल बा । भोजपुरी के विकास में इहाँ के बड़हन योगदान बा ।

रामनाथ पाण्डेय के कहानी 'अँचरा के छाँह' देश के एगो ज्वलन्त समस्या नक्सलवाद के वजह के खोज करत ई बतावता कि मानवतावाद के द्वारा समाज के सब समस्या सुलझ सकता । मनोरंजन प्रसाद सिन्हा के कविता 'फिरंगिया' आजादी के तराना ह । ई आजादी के लड़ाई के बेरा लोग के कंठहार बन गइल ।

भोजपुरी में अनुवाद के काम खूबे भइल बा । विश्वकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर के एह गीत में सभे देशवासी के जाति, धर्म सम्प्रदाय के भेदभाव भुला के एकता के सूत्र में बंध के रहे के सीखता ।

राजेन्द्र प्रसाद सिंह के लेख पर्यावरण के संगे-संगे भोजपुरी क्षेत्र के संस्कृति उजागर करता । ज्ञान हरदम सहज होला । इहे वजह बा कि राजेन्द्र प्रसाद सिंह अपना लेख में भाषाविज्ञान के कइगो बात सरल ढंग से कह गइल बानी ।

छठ भोजपुरिया क्षेत्र के महान सांस्कृतिक पर्व ह । एकरे के आधार बना के लिखल शैलेन्द्रनाथ श्रीवास्तव के कहानी भूमंडलीकरण के आँधी से लड़त-जूझत जीवन मूल्य आ अंततः मानवीय दृष्टि के विजय के कहानी कहतिया ।

विश्व प्रसिद्ध कथाकार एंतोन चेखव के कहानी में ढहत सामंतवाद के चित्र उरेहाइल बा । भोजपुरिया क्षेत्र अबहीं सामंतवादी संस्कृति से पूरा तरह मुक्त नइखे भइल । ढहत सामंतवाद हँसी आ दया के पात्र बा ।

पाण्डेय कपिल भोजपुरी के वरिष्ठ कवि लेखक हईं । इहाँ के कविता में होत भोर के मनभावन चित्र खींचाइल बा । सूर्यदेव पाठक 'पराग' के रचना में आदमी-आदमी के बीच प्रेम सद्भाव बढ़ावे पर जोर दिहल बा ।

हरिशंकर वर्मा के निबंध में जिनगी के यात्रा के रोचक वर्णन भइल बा । जइसे-जइसे उमिर बढ़त जाले आदमी के बदलत समस्यन के सामना करे के पड़ेला । जिनगी में सफलता खातिर जरूरी बा कि आदमी चुनौतियन के कबूल करे आ अपना में समस्यन से जूझे के, सामना करे के हूब आ हुनर पैदा करे ।

परमेश्वर दूबे शाहाबदी के नवगीत निराशा में भरल मन में आशा आ विश्वास के दीया जरा रहल बा । उषा वर्मा के कहानी विधवा मेहरारू के दुःख भरल जिनगी के चित्रण करत छात्रन में मानवीय दृष्टिकोण पैदा करे में सहायक बा ।

भोजपुरी के संस्कृति बड़ी समृद्ध बा । एकर एगो झलक 'थाती' खंड में मिली । भोजपुरी में लोककथा आ लोकगीतन के अकूत भंडार बा । धीरे-धीरे एकनी के लोप भइल जाता काहे कि आज के जिनगी के आपा-धापी में लोग अतना अफुराइल चल जाता कि एने ध्यान देवे के फुरसते नइखे मिलत । लोककथा आ लोकगीतन के संस्कृति-संरक्षण में बहुत योगदान रहल बा । कजरी, बिरहा, फाग, संस्कार-गीत आदि के जोगावल जरूरी बा । लोकगीतन के अलावा भी बहुते गवैया, संत वगैरह के गीत आ पद जनता का कंठ में विराजेला जइसे महेन्दर मिसिर के पूरबी । 'थाती' में एह कुल के बानगी दिहल गइल बा ताकि छात्र लोग का एकर रस के अनुभव हो सके आ ऊ लोग एकर महातम समुझ सके ।

भोजपुरी साहित्य एगो लमहर यात्रा तय कर चुकल बा । एह यात्रा में एकरा भाषा में स्वाभाविक रूप से समय-समय पर परिवर्तन भइल बा । एह पुस्तक में संकलित रचनन में एकर झलक मिली ।

हर पाठ का संगे अभ्यास दिहल गइल बा । एह में एह बात के ध्यान राखल गइल बा जे छात्र रचना से बढ़िया तरीका से वाकिफ हो जाव, संगे-संगे छात्र में व्याकरण आ भाषा ज्ञान के भी विकास होखे आ ओकरा में कल्पनाशीलता आ खोजी प्रवृत्ति के बढ़ावा मिलो ।

ब्रजकिशोर
अध्यक्ष
भोजपुरी पाठ्यपुस्तक विकास समिति

डॉ. सुरेन्द्र कुमार
समन्वयक
भोजपुरी पाठ्यपुस्तक विकास समिति

विषय-सूची

			पृष्ठ
	प्रस्तावना		iii
	ई किताब		vii
1.	साहेब मोर बसले तोर हीरा हेराइल कचरे में	-संत कबीर दास	1
2.	जोंक	-राहुल सांकृत्यायन	5
3.	मछरी	-रामेश्वर सिंह काश्यप	20
4.	बहुत दिनन पिय बसल विदेसा जहिया भइल गुरू उपदेस	-धरनीदास	33
5.	केऊ ना संग साथी बंदे अगिया लागे बनवा जरे	-भिनिकराम जी	37
6.	ग्रियर्सन आ सुनीति कुमार चटर्जी	-डॉ उदय नारायण तिवारी	41
7.	अछूत की शिकायत	-हीरा डोम	54
8.	पारन	-डॉ भगवत शरण उपाध्याय	59
9.	उत्थान	-महेन्द्र शास्त्री	87
10.	अँचरा के छाँह	-रामनाथ पाण्डेय	92
11.	फिरंगिया	-मनोरंजन प्रसाद सिन्हा	106

12. पुनि रे तिरिथिया में जागु चित्त, धीरे (बाएन) -रवीन्द्रनाथ ठाकुर 114

अनुवाद- रामबिहारी ओझा 'रमेश'

13. मानिक मोर हेरइले -डॉ. विद्यानिवास मिश्र 120
14. शरद के लहंगा -डॉ रामनाथ पाठक प्रणयी 133
15. भोजपुरी प्रदेश में नीम, आम, आ जामुन-डॉ. राजेन्द्र प्रसाद सिंह 138
16. केकरा खातिर छठ -डॉ शैलेन्द्रनाथ श्रीवास्तव 148

17. साल में एक बेर (बाएन) -अंतोन चेखव 168
अनुवाद- डॉ प्रभुनाथ सिंह
18. भोर हो गइल -पाण्डेय कपिल 180
19. प्रेम के कलश -सूर्यदेव पाठक 'पराग' 184
20. जनम आ छठी -हरिशंकर वर्मा 189
21. रूप के हिरन -परमेश्वर दुबे शाहाबादी 201
22. काकी के गहना -डॉ उषा वर्मा 205
23. नवगीत -गंगा प्रसाद अरुण 217

थाती
24. मंगल गीत 221
25. अँगुरी में डँसले बिया...... -महेन्द्र मिसिर 222
26. कउआहँकनी रानी 223